प्रसार कर रहे हैं, अपने अत्याचारों का किला खड़ा कर रहे हैं।

सम्पूर्ण विश्व में ज्ञान एवं चेतना की ज्योति में एकरूपता है। संसार का कण-कण उसके तीव्र प्रकाश से प्रकाशित है। उसके अन्दर से प्रस्फुटित क्रान्ति की ज्वाला एक जैसा है। सत्य का उज्ज्वल प्रकाश जन-जन के हृदय में व्याप्त है।

प्रकाश की शुभ्र ज्योति का रूप एक है। वह सभी स्थान पर एक समान अपनी रोशनी बिखेरता है। क्रान्ति से उत्पन्न ऊर्जा एवं शक्ति भी सर्वत्र एक समान परिलक्षित होती है। इसीलिए समस्त जनता का चेहरा एक है।

सम्पूर्ण विश्व में दानव एवं दुरात्मा एकजुट हो गये हैं। दोनों की कार्यशैली एक है। इनके विरुद्ध छेड़े गये युद्ध की शैली भी एक है।

सारांश यह है कि संसार में अनेकों प्रकार के अत्याचार, शोषण तथा दमन समान रूप से अनवरत जारी है। उसी प्रकार जनहित के अच्छे कार्य भी समान रूप से हो रहे हैं। सभी की आत्मा एक है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी 26/5/2021
चा० उ० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

2020 वर्षीय परीक्षार्थियों के लिए

पुस्तक का नाम – दिगंत-भाग-2 पद्य भाग

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी

अ० दि० – पत्र

शीर्षक – जन-जन का चेहरा एक

कवि – गजानन माधव मुक्तिबोध

प्रश्न: – "जन-जन का चेहरा एक" शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर: – 'जन-जन का चेहरा एक' शीर्षक कविता में यशस्वी कवि मुक्तिबोध ने अत्यन्त सशक्त एवं रोचक ढंग से विश्व की विभिन्न जातियों एवं संस्कृतियों के बीच एकरूपता दर्शाते हुए मनोवैज्ञानिक वर्णन किया है। कवि के अनुसार संसार के प्रत्येक महादेश, प्रदेश तथा नगर के लोगों में एक समान प्रकृति पायी जाती है।

विद्वान कवि की दृष्टि में प्रकृति समान रूप से अपनी ऊर्जा, प्रकाश एवं अन्य सुविधाएँ समस्त प्राणियों को वे चाहे जहाँ निवास करते हों, उनकी भाषा एवं संस्कृति जो भी हो बिना भेद-भाव किए प्रदान कर रही है। कवि की संवेदना प्रस्तुत कविता में मुखरित हुई है।

ऐसा प्रतीत होता है कि कवि शोषण तथा उत्पीड़न की शिकार जनता द्वारा अधिकारों के संघर्ष का वर्णन कर रहा है। वह समस्त संसार में रहने वाली जनता के शोषण के खिलाफ संघर्ष को रेखांकित करता है। इसलिए कवि उनके चेहरे की झुर्रियों को एक समान पाता है।

नदियों की तीव्र धारा में जन-जन की जीवन धारा का बहाव कवि के अन्तर्मन की वेदना के रूप में प्रकट हुआ है

जनता अनेक प्रकार के अत्याचार तथा अन्याय से प्रताड़ित हो रही है। मानवता के शत्रु जनशोषक दुर्जन लोग काली-काली छाया के समान अपना

शेष आगे –

कहते हैं कि वह अपनी विरह में पागल हो गई है। वह अपने चितचोर अर्थात अपने प्राण-प्रिये को स्वप्न में देखती है। यह स्वप्न विरहिणी को सुखद लगता है, परन्तु जैसे ही वह उससे मिलने के लिए उठती है तो अचानक उसकी आँखें खुल जाती है। इसके पश्चात् उसका स्वप्न टूट जाता है। स्वप्न की इसी भूल-भूलैया में वह अपने प्रियतम का दर्शन करने से वंचित रह जाती है। संसार के लोग सोकर समय बिताते हैं, किन्तु वह जागकर ही समय बिताती है।

4. प्रश्न:- 'पथिक-प्रिया' घास क्यों बनना चाहती है?

उत्तर:- विरहिणी 'पथिक-प्रिया' पति-वियोग की पीड़ा में तड़प रही है। वह अपने चितचोर के वियोग में विक्षिप्त सी हो गई है। विक्षिप्तावस्था में वह कहती है कि मैं यदि घास होती तो मेरे नाथ उस पर पैर रख-कर चलते। उनके चलने से मुझे पूर्ण आनन्द की अनुभूति होती। विरहिणी अपने प्रियतम को अपने जीवन का आराध्य मानती है। वह अपने प्रियतम के पद की धूलि बनना चाहती है। क्योंकि उसके नाथ ही उसकी आत्मा की शान्ति है और वही उसका जीवन।

डॉ० देव चरण प्रसाद [redacted]
एसो० प्रो० हिन्दी
श० उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ
26/04/2021

'पथिक' - काव्य - कवि- श्री रामनरेश त्रिपाठी

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

शास्त्री द्वितीय खण्ड - अनिवार्य द्वितीय-पत्र

राष्ट्रभाषा हिन्दी

1. प्रश्न :- पथिक-प्रिया कौए से क्या कहती है?

उत्तर :- पथिक-प्रिया अपने पति के वियोग में तड़प रही है। वह अपने प्राण-प्रिये की आगमन की बाट जोह रही है। उसे पूर्ण विश्वास है कि मेरे पति एक-न एक दिन मुझसे अवश्य मिलने आयेंगे इसलिए वह कौए को संबोधित करती हुई कहती है कि हे-काग मेरे मरने पर तुम मेरे समस्त शरीर को खा लेना, परन्तु मेरी आँखों को छोड़ देना। क्योंकि मैं इन्हीं आँखों से अपने प्रियतम का दर्शन करना चाहती हूँ। अब मुझे एक ही आकांक्षा रह गई है कि मैं किसी प्रकार अपने पति का एक बार दर्शन कर अपने जीवन को सार्थक बना सकूँ।

2. प्रश्न :- विरहिणी पथिक-प्रिया खिड़की से क्या देखती है?

उत्तर :- विरहिणी पथिक-प्रिया अपने प्राणप्रिये के वियोग की ज्वाला में जल रही है। उसे नींद नहीं आती है। वह निरन्तर खिड़की से मार्ग की ओर देखती रहती है। उसे पूर्ण विश्वास है कि मेरे नाथ मुझसे मिलने के लिए अवश्य आयेंगे। इसी आशा और विश्वास से वह खिड़की से मार्ग को निहारती रहती है। उसे यह पूर्ण विश्वास है कि मेरे आराध्य इसी रास्ते से चलकर मेरे पास आने वाले हैं। इसीलिए वह बार-बार खिड़की से मार्ग की ओर देखती है।

3. प्रश्न :- 'पपीहा' की आवाज सुनकर विरहिणी क्या करती है?

उत्तर :- कवि श्री रामनरेश त्रिपाठी विरहिणी की मार्मिक दशा का सजीव वर्णन करते हुए ~~करती करते~~

शेष आगे -

महिलाओं की बाल स्मृतियाँ भी जाग उठती हैं।"

उस प्रकार हम देखते हैं कि मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यासों में देशकाल और वातावरण का विस्तार से चित्रण हुआ है। कहा भी कहा गया है कि तत्कालीन साहित्यिक रचनाओं पर देशकाल और वातावरण का प्रभाव अवश्य पड़ता है। प्रेमचन्द का उपन्यास भी इससे अछूता नहीं है।

डॉ० देव चरण प्रसाद [redacted]
एसो० प्रो० हिन्दी 26/04/21
रा० उ० सं० महा वि० सुखसेना, पूर्णियाँ

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र

'निर्मला' उपन्यास

लेखक- प्रेमचन्द

प्रश्न:- देश काल और वातावरण की दृष्टि से प्रेमचन्द की उपन्यास कला की समीक्षा कीजिए।

उत्तर:- उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचन्द के उपन्यासों में भारतीय जीवन और समाज का विस्तृत चित्रण हुआ है। प्रायः भारतीय समाज की कोई भी प्रवृत्ति अछूती नहीं रही है। अन्य किसी उपन्यासकार में भारतीय समाज और भारतीय जीवन का ऐसा व्यापक चित्रण नहीं मिलता है। हिन्दी में लिखी गयी उनके उपन्यासों में प्रत्येक वर्ग के जीवन का यथार्थ चित्रण हुआ है।

तत्कालीन राजनीतिक संघर्ष और स्वतंत्रता-आन्दोलन की घटनाओं से उनके उपन्यास भरे पड़े हैं। अहिंसात्मक जन-आन्दोलन, किसान, मजदूर-आन्दोलन, उग्रवादियों के आतंकवादी कार्य आदि का व्यापक चित्रण उनके उपन्यासों में हुआ है। देशोद्धार और समाज-सुधार की धारा प्रायः प्रत्येक उपन्यास में प्रवाहित हुई है। इन सबके ऊपर शोषक और शोषित वर्ग का संघर्ष उभरकर ऊपर आ गया है।

वातावरण को सजीवता प्रदान करने के लिए मुंशी प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में प्रकृति के भी अनेक सुन्दर चित्र प्रस्तुत किये हैं। प्रेमचन्द ने प्रकृति के अलंकृत चित्र बड़े कौशल से प्रस्तुत किये हैं। वर्षा ऋतु और उसमें पड़े हुए झूलों का एक चित्र इस प्रकार है— "बरसात के दिन हैं, सावन का महीना, आकाश में सुनहरी घटाएँ छायी हुई हैं। रह-रहकर रिम-झिम वर्षा हो रही है। अभी तीसरा पहर है, पर ऐसा मालूम हो रहा है, शाम हो गई। आमों के बागों में झूला पड़ा हुआ है। लड़कियाँ भी झूल रही हैं और उनकी माताएँ भी। दो-चार झूल रही हैं, दो-चार झूला रही हैं, कोई कजली गाने लगती है, कोई बारहमासी। इस ऋतु में

शेष आगे-